वर्चुअल दुनिया का वास्तविक दस्तावेज़ : डॉ. अजय शर्मा कृत उपन्यास 'शंख में समंदर'

पूजा देवी, शोधार्थी

प्रो.(डॉ.) सुधा जितेन्द्र,

हिंदी–विभाग

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

डॉ. अजय शर्मा पंजाब के हिन्दी लेखकों में एक प्रतिष्ठित नाम हैं। एक सफल उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार के साथ–साथ वे एक जागरूक पत्रकार भी हैं। व्यवसाय से डॉक्टर और हृदय से संवेदनशील रचनाकार डॉ. अजय शर्मा को यदि पंजाब के समकालीन हिन्दी लेखकों में शिरोमणि साहित्यकार कहें तो कोई अन्युक्ति नहीं होगी। यह एक ऐसे बिरले लेखक हैं जो अपने लेखन के माध्यम से पाठक के समक्ष साकार दृश्य सृजित करने में सिद्धहस्त हैं। 2001 से 2024 तक की अवधि में आपने 16 उपन्यास तथा 5 नाटक हिन्दी जगत को दिये हैं। इनके उपन्यासों में 'चेहरा और परछाई', 'खुली हुई खिड़की', 'आकाश का सच', 'बसरा की गलियां', 'शहर पर लगी आंखें', 'कमरा नम्बर 909', 'शंख में समंदर', 'खारकीव के खंडहर', आदि सुप्रसिद्ध उपन्यास हैं।

'शंख में समंदर' डॉ. अजय शर्मा का 15वां उपन्यास है। यह उपन्यास कोरोना काल के दौरान समाज में आए परिवर्तन को रेखांकित करता है। उपन्यास की सारी कथा वर्चुअल धरातल पर 'ऑनलाइन' के माध्यम से कोराना काल को आधार बनाकर आधुनिक शिक्षा, फेसबुक, व्हाट्सएप, ऑनलाइन सैमीनार आदि आधुनिक टैक्नोलॉजी के विकास पर आधारित है। विवेच्य उपन्यास में आधुनिक टैक्नोलोजी के प्रभाव पर चर्चा करने से पहले आधुनिक टैक्नोलॉजी के बारे में जानना आवश्यक है। 'आधुनिक टैक्नोलॉजी' से तत्पार्य तकनीकी उपकरणों के उत्पादन और उपयोग से है, समाज और मानव गतिविधियों के विभिन्न क्षेत्रों के साथ उनकी परस्पर अंतःक्रिया से है। जिसमें फेसबुक, व्हाट्सएप और वह सभी ऐप्लिकेशन जो लोगों को ऑनलाइन जोड़ने का काम करती हैं–का चित्रण है। वर्तमान दौर सूचना का दौर है। जिसके चलते समाज में आए दिन नए–नए आविष्कार हो रहे हैं। सूचना

प्रौद्योगिकी ने पूरी दुनिया को एक सक्रीन पर ला कर रख दिया है। जिसके परिणामस्वरूप विश्व में विभिन्न राष्ट्रों के बीच दूरियाँ कम हो गई हैं और एक दूसरे देशों की संस्कृति से परिचित होने का अवसर मिला है। यदि हम संचार–तंत्र के विकास की बात करें तो 15वीं शताब्दी से इसका विकास माना गया है। जब लोग धर्म प्रचारक के रूप में यहाँ–वहाँ घूमते थे। इसके बाद यूरोप ने 1490 में डाक–तंत्र की स्थापना की और धीरे–धीरे अमेरिका, अफ्रीका और भारत आदि देशों में भी इसका प्रसार हुआ।

आधुनिक संचार–तंत्र के विकास की यदि हम बात करें तो इसका विकास 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध से माना गया है। हर्ष देव के मतानुसार–''इस अवधि में टेलीग्राफ, टेलीफोन, और बिजली, संचालित मुद्रण तकनीक तथा पुनः कुछ ही समय बाद रेडियों, फोटोग्राफी, टेलीविजन, संचार उपग्रह जैसे युगांतकारी आविष्कार हुए। इस प्रकार देखते ही देखते एक अधूरे, शिथिल और अव्यवस्थित तंत्र ने बेहद सक्षम, द्रुतगति वाले बहुआयामी सशक्त संचार तंत्र का रूप ग्रहण कर लिया।''[1] इसके बाद इंटरनेट युग चल पड़ा, जिसने पूरी दुनिया पर अपना वर्चस्व बना लिया। ''इंटरनेट का आरम्भ 1979 में एक शैक्षिक नेटवर्क 'यूजनेट–न्यूज़' के रूप में हुआ।''[2] इंटरनेट का सर्वप्रथम प्रयोग अमेरिका में हुआ और उसके बाद धीरे–धीरे दूसरे देशों में भी इसका प्रसार हुआ। आज इंटरनेट सहायता से कई सोशल नेटवर्किंग साइटों का उदय हुआ है और विश्वभर के अधिकतम लोग इससे जुड़ चुके हैं। विज्ञापन (Advertisement) वर्तमान दौर की महत्वपूर्ण तकनीक है। जिसे लुभावने ढंग से बनाकर सोशल साइट्स पर चढ़ा दिया जाता है, जो लोगों के मन में रूचि उत्पन्न करने का काम करता है।

बीज–शब्द

उपन्यास, साहित्य, सोशल मीडिया, वर्चुअल दुनिया, ऑनलाइन माध्यम, तकनीकी उपकरण, सूचना–प्रौद्योगिकी, विज्ञापन, आधुनिक संचार–तंत्र, इंटरनेट, टेलीफोन, टेलीग्राफ, कोरोना महामारी, लॉकडाउन, आधुनिक शिक्षा, आधुनिक टैक्नॉलोजी का प्रभाव इत्यादि।

प्रस्तुत उपन्यास में कोरोनाकाल में जब लोगों का बाहर आना–जाना बंद हो गया था, तब आम जन सोशल नेटवर्किंग साइट्स की सहायता से अपने कार्य को निरंतर जारी रख पाये। उपन्यास के प्रमुख पात्र डॉ. केशव कहते हैं कि–''मैंने फेसबुक को सक्रोल करना भुरू ही किया था, पाया एक एड थी, जो एक्टिंग सिखाने के लिए वर्कशाप थी। ऐड, बहुत सुंदर ढंग से डिजाइन की गई थी.....मैंने

उस पर क्लिक किया, उस पर फार्म आ गया। उसमें मैंने अपना परिचय भरा, तो सीधा व्हाट्सएप नम्बर सामने आ गया।''3 इस प्रकार विज्ञापन लोगों को आकर्शित तथा प्रभावित करने का काम करता है। उपन्यास में अनिल श्रीमाली द्वारा ऑनलाइन एक्टिंग का कोर्स सिखाया जाता है। जिसे डॉ. केशव, प्रोफेसर जिंदल, सुमित, नूर, पीयूश, संध्या, हरिजा आदि ज्वाइन करते हैं। इनमें से डॉ. केशव और प्रोफेसर जिंदल सबसे अधेड़ उम्र के हैं जिनकी उम्र साठ वर्ष से ऊपर है बाकि सब कुछ स्कूल के विद्यार्थी हैं और कुछ कॉलेज के।

'शंख में समन्दर' उपन्यास :– सोशल मीडिया के सकारात्मक रूप का आइना

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने सोशल मीडिया का सकारात्मक रूप दिखाया है। कोरोना–काल के दौरान जब लोग अपने–अपने घरों में बंद हो गये थे। कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को संकट में डाल दिया था। कई देशों में लॉकडाउन लग गया था, कई लोगों का रोजगार छूट गया था। लेखक ने इस संक्रमणकालीन परिस्थितियों में लोगों को जूझते हुए तथा उससे उभरते हुए दिखाने का प्रयास किया है। लेखक ने आधुनिक टेक्नोलॉजी के माध्यम से कोरोना के समय में जन–सामान्य जीवन को उकेरा है कि कैसे इस महामारी के दौरान आइसोलेशन में रह रहें लोगों को सोशल–मीडिया ने आपस में एक–दूसरे से जोड़े रखा।

सोशल मीडिया में फेसबुक एक ऐसी निशुल्क साइट है जिसके माध्यम से व्यक्ति आसानी के साथ किसी दूसरे व्यक्ति के साथ सम्पर्क कर सकता है। यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जिसके माध्यम से हम अपनी बात देश–दुनिया के कोने–कोने तक पहुंचा सकते हैं। उपन्यास का पात्र डॉ. केशव फेसबुक को अपने जीवन का महत्वपूर्ण उपकरण मानता है। फेसबुक एक ऐसी सोशल नेटवर्किंग साइट है जिसे ज्वाइन करके या सदस्य बनकर आज विश्व के कोने–कोने में रहने वाले लोगों से चैटिंग, मैसेज, पिक्चर, वीडियों आदि का आनंद लिया जा सकता है। डॉ. केशव कहते हैं कि– ''फेसबुक ने भी, मुझे बहुत प्यार दिया है। नए पाठक दिये और रिश्ते भी। फेसबुक के माध्यम से, रचनाओं की चर्चा भी हुई। एक छोटी–सी दुनिया फेसबुक पर ही बस गई।''[4]

वर्तमान दौर में सोशल मीडिया ने विश्व की प्रत्येक जानकारी इंसान की मुटठी में लाकर रख दी है। इसके माध्यम से लोगों को अपने सपने साकार करने का अवसर मिला है। ऑनलाइन सोशल साइट्स के माध्यम से कोरोनाकाल के दौर में समाज की गतिविधियों के साथ–साथ रूचिकर गतिविधियों को भी बढ़ावा

मिला है। इस उपन्यास का पहला ही परिच्छेद कुछ इस तरह की रूचि की चर्चा करता है। जिसमें डॉ. केशव ऑनलाइन क्लासेज में से एक्टिंग की क्लास ज्वाइन करता है। उनकी उम्र साठ वर्श से ज्यादा होती है लेकिन फिल्म इंडस्ट्री में अभिनय करने के लिए व्यक्ति की उम्र साठ वर्श से कम होनी चाहिए। डॉ. केशव कहते हैं–''अब इस उम्र में हीरो तो बनना नहीं। मन की तसल्ली भी बहुत बड़ी बात होती है।''[5] डॉ. केशव को बचपन से ही हीरो बनने की इच्छा रही है लेकिन किसी कारणवश इनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पायी। परन्तु कोरोना काल ने इनकी यह तमन्ना पूरी कर दी है। वे ऑनलाइन एक्टिंग क्लास ज्वाइन करते हैं और क्लास में जो कुछ भी सीखाया जाता है उसका निरंतर अभ्यास करते रहते है। एक्टिंग सिखाने वाला अनिल श्रीमाली डॉ. केशव के बेटे की उम्र का होता है। एक्टिंग सिखाते समय अनिल श्रीमाली द्वारा भावाभिव्यक्ति की विभिन्न भंगिमायों का उपन्यास में उल्लेख किया गया है। भरतमुनि द्वारा दिये गए रस और भाव का बहुत ही सुन्दर ढंग से उदाहरण सहित वर्णन किया है। जिससे एक्टिंग सीखने वाला व्यक्ति एक्टर के साथ–साथ एक अच्छा साहित्य का पाठक या अच्छा साहित्यकार भी बन सकता है। लेखक ने इसमें यह बताने का प्रयास किया है कि यदि व्यक्ति अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहता है तो वह किसी भी उम्र में कर सकता है। केवल व्यक्ति में अपने सपनों को पूरा करने का जुनून होना चाहिए।

सोशल मीडिया का नकारात्मक रूप

वर्तमान समय में सोशल मीडिया का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है, जिससे समाज में लोगों के आपसी संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है, रिश्तों का हनन हो रहा है क्योंकि व्यक्ति अपने सभी सुख–दुःख सोशल मीडिया पर शेयर कर लेता है। जिससे उसे अपनों की आवश्यकता कम महसूस होने लगती है। डॉ. केशव कहते हैं कि– ''हमारी रीच ग्लोबल हो गई है, लेकिन रिश्ते सिकुडने लगे हैं।..... खून का रिश्ता भले ही दम तोड़ दे, लेकिन फेसबुक का रिश्ता कभी दम नहीं तोड़ता, अगर आप रि ता ठीक तरह से निभा रहे हैं। खून का रिश्ता दम तोड़ देता है, रिश्तेदारी में दरार पड़ जाती है। इसके बाबजूद, फेसबुक पर रिश्ता मजबूती से टिका रहता है, भले ही, यह भ्रम जाल ही क्यों न हो?.....''[6] सोशल मीडिया के माध्यम से कई सालों से बिछड़े दोस्त/प्रेमी प्रमिका आपस में मिल जाते हैं। इस उपन्यास में प्रोफेसर जिंदल द्वारा डॉ. केशव की 'पर्त–दर–पर्त' पढ़ी गई कहानी में फेसबुक के माध्यम से दो प्रेम करने वाले कई वर्शों बाद आपस में मिल जाते हैं। कहानी का नायक आकाश जो इंजीनियरिंग का विद्यार्थी होता है और सुखबीर की शादी जात–पात के रहते उसके प्रेमी के साथ नहीं हो पाती। आकाश

की शादी भी आरती नाम की लड़की के साथ हो जाती है, लेकिन आकाश को आरती में हमेशा सुखबीर ही दिखती है। आकाश शादी के बाद भी सुखबीर की याद में रहता है। आकाश कहता है कि ''कई साल बीत गए। बच्चे भी हो गए। मेरे दिमाग से सुखबीर नहीं निकल पाई। मैं जब भी पत्नी के पास जाता और उसे अपनी आगोश में लेता, मेरे नथुनों में सुखबीर की गंध भर जाती.....।''[7] एक बार फेसबुक सक्रोल करते–करते आकाश को सुखबीर की प्रोफाईल फोटो दिखती है और उसे देखकर वह अत्यंत खुश हो जाता है उसे मैसेज करता तथा साथ में अपनी फोटो भेजता है ताकि सुखबीर उसे पहचान सके। इसके बाद उनकी रोज आपस में बातचीत होती रहती। एक दिन सुखबीर आकाश से मिलने जालंधर आती है। आकाश ने जिस सुखबीर से प्रेम किया तथा जिसे फेसबुक पर देखा था वास्तव में वह वैसी नहीं थी, उसे सामने देखकर आकाश उसे पहचान ही नहीं पाता और कहता है कि– ''उसे देखते ही, एक बार, मेरी आँखों के आगे अंधेरा आ गया। इतनी अधेड़ लग रही थी,.....उसके चेहरे पर कोई गलो नहीं था।.....उसके शरीर से गोबर की गंध आ रही थी। मेरा पास खड़ा होना भी मुश्किल हो रहा था।...''[8] सुखबीर से मिलने के उपरांत उसे अपनी पत्नी (आरती) के प्रति लगाव होने लगता है और कहता है कि–''आज किसी के शरीर की नहीं, केवल आरती के शरीर से निकली गंध मेरे नथुनों से टकरा रही थी। मुझे लगा आज का दिन, हमारी जिंदगी का पहला दिन है।''[9]

वास्तव में फेसबुक के माध्यम से आज के मनुष्य के विसंगति चिंतन के भी दर्शन होते हैं। दोस्तों का मिलना तो सकारात्मक पहलू हैं परन्तु वैवाहिक जीवन में अपने पार्टनर के साथ धोखा भी है। इस कहानी में सुखबीर के माध्यम से एक गांव की स्त्री के जीवन से परिचित करवाया है जो गाय, भैसें पाल कर अपना जीवनयापन करती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में पंजाबी संस्कृति का प्रसिद्ध लोकगीत 'छल्ला' को लेखक ने एक नाटक के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें जल्ला नामक मल्लाह का पुत्र है छल्ला, जो एक दिन नाव चलाते समय दरिया में डूबकर मर जाता है, जिसके वियोग में वह पागल हो जाता है और गाने की धुन में कहता है–

''जाओ नी कोई मोड़ लिआवो

जेहड़ा नाल गेया मेरे लड़के.....''[10]

यही जल्ले द्वारा गाये गये गीत अभी पंजाबी संस्कृति का एक हिस्सा बन गए हैं। इस नाटक में पारिवारिक/दाम्पत्य जीवन तथा पिता का पुत्र के प्रति प्रेम देखने को मिलता है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने आधुनिक शिक्षा पर भी चर्चा की है। सूचना संचार तंत्र से पहले शिक्षा के लिए तखती, स्लेट, चॉक, ब्लैक बोर्ड, कलम दवात आदि का प्रयोग किया जाता था। लेकिन वर्तमान दौर में बच्चे के पास केवल एक स्मार्ट फोन होना चाहिए उसी फोन के माध्यम से बच्चा अपने घर बैठे–बैठे पढ़ाई कर सकता है। लॉकडाउन से पहले ऑनलाइन क्लासेज़ का प्रचलन बहुत कम था। लेकिन कोरोना महामारी के दौरान सोशल मीडिया/आधुनिक टैक्नोलॉजी का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत तीव्र गति से विकास हुआ है।

इस उपन्यास में 'ऑनलाइन क्लास' नाटक के माध्यम से लेखक ने प्राइवेट स्कूल की वास्तविकता तथा स्कूल के प्रिंसिपल की तानाशाही को सामने लोन का प्रयास किया है। इसी में एक अविभावक का कथन है– ''किताबें हमने बाज़ार से खरीद ली हैं। लेकिन जो किताबों का सेट स्कूल से छह हज़ार में मिलता है। वही सेट बाज़ार में, दो हज़ार से ज्यादा नहीं। स्कूल वाले सेट में सारी टेक्सट बुक्स नहीं हैं। सारी की सारी किताबें, प्राइवेट पब्लिशर की हैं।''[11] इस तरह हमारे देश में प्राइवेट स्कूल वाले शिक्षा के नाम पर आम जनता को लूट रहे है। यदि बच्चों को स्कूल की यूनिफार्म लेनी हो तो वह भी स्कूल की ही किसी खास दुकान से मिलेगी।

सोशल मीडिया के लाभ तो बहुत हैं यदि इसका सकारात्मक रूप में प्रयोग किया जाए तो, लेकिन यदि इसका ग़लत उपयोग हो तो इसके नुकसान भी बहुत हैं। वर्तमान समय में लोगों को सोशल मीडिया का एक नशा–सा हो गया है और व्यर्थ में इस पर अपना समय खराब करते हैं। कई बार व्यक्ति को मोबाइल पर कुछ काम नहीं भी होता है फिर भी उसको बार–बार फोन पर फेसबुक, व्हाट्सएप आदि साइट्स को खोलकर देखेन की लत–सी लगी होती है। डॉ. केशव कहते हैं कि–''आदत गंदी है, लेकिन पड़ गई है, छूटेगी कैसे? तकनीक के दो पहलू, हमेशा ही रहे हैं, अच्छा भी और बुरा भी। मुझे इसमें सब कुछ अच्छा ही नज़र आता है, क्योंकि मैंने इसमें अच्छा ही ढूंढा है।''[12]

उपन्यास में लेखक ने देश की युवा पीढ़ी विशेषकर पंजाब की युवा पीढ़ी का भी वर्णन किया है जो अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जाकर बस जाते हैं। पहले–पहले तो माता–पिता ही अपने बच्चें को विदेश भेजने के लिए उत्सुक होते हैं लेकिन बाद में वही माता–पिता अकेलेपन का शिकार होते है और बेसहारा हो जाते हैं। विदेश जाकर बच्चे भी अपने माता–पिता को भूल जाते हैं। प्रोफेसर जिंदल के माध्यम से लेखक कहते हैं कि–''खास तौर पर पंजाब की युवा पीढ़ी, जो विदेशी धरती पर जड़ें तलाश रही है। उनके अभिभावक तिल–तिल करके मरने

को मजबूर हैं। हलांकि भेजने के लिए, अभिभावक ही उत्सुक होते हैं.....इस कदर दुष्परिणाम होंगे शायद ऐसी कल्पना भी नहीं की होगी।''[13]

इस उपन्यास में लेखक ने माँ के ममत्व का भी चित्रण किया है। कोरोना महामारी ने सभी रिश्तों को तार–तार कर दिया था। जब किसी व्यक्ति को कोरोना हो जाता तो उसे देखकर लोगों के मन में दहशत–सी आ जाती थी। लेखक कहते हैं कि ''कोरोना काल में, अगर हम दूसरों से बात न भी करें, चल जाएगा। लेकिन हर आदमी, अपनी ही परछाई से डरने लगा है। उसे लगता है, कहीं परछाई कोरोना का वायरस, साथ लेकर न आ जाए।''[14] कोरोना से ग्रसित व्यक्ति के आस–पास किसी की आने की हिम्मत नहीं होती थी। इसी डर से कि कहीं वह भी संक्रमित न हो जाए। लेखक कहते हैं कि–''मैं जब अस्पताल से डिस्चार्ज होकर घर लौट रहा था, अकेला ही था। कोई नहीं था, मेरे आस–पास।.....भले ही, माँ इस दुनिया मे नहीं रही, लेकिन गाड़ी में बैठकर, मुझे माँ की भी बहुत याद आई थी। जरा–सी बुखार होने पर सारी–सारी रात बैठी रहती थी, मेरे सिराहने। कभी मेरा माथा देखती, तो कभी बाजू को पकड़कर हाथ की तलियाँ देखती। आंख लग जाती, तो हडबड़ाकर उठ बैठती और पूछती बेटा दूध में पत्ती डालकर दे दूं।''[15]

उपन्यासकार द्वारा अपने देश की सरकार की सरहाना भी की गई है। ''130 करोड़ से ऊपर वाली आबादी का इंतजाम, इतनी जल्दी कैसे किया जा सकता था? फिर भी हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी जी ने, एक नीति के तहत सम्भाला है। जिससे किसी भी देश के मुकाबले भारत में जान माल का बहुत कम नुक्सान हुआ।''[16]

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने समकालीन लेखकों को भी जोड़ा है और साथ ही भारत की पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथाओं का वर्णन करके भारतीय संस्कृति से परिचित करवाने का प्रयास किया है।

कोरोना महामारी के दौरान अस्पतालों की दशा को एक कविता के रूप में उकेरा है–

''अस्पताल के हर कोने में दर्द गहरा था
दीवारें आंसुओं से नम थीं।
सन्नाटे की चीखों की भी,
अपनी ही एक आवाज़ थी

* * * * *

चींख सुनकर भी कोई रूकता नहीं था
ब्लकि और तेजी से चलना भुरू कर देता
उस कमरे की तरफ
जहाँ उसका कोई अपना
जिंदगी और मौत से जंग लड़ रहा था।''[17]

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने समाज में हो रही गतिविधियों पर कुछ न कुछ लिखते रहने का भी संदेश दिया है। लेखक कहते हैं कि– ''इतनी बड़ी महामारी है, इस पर, जितना लिखा जाए, उतना ही कम है। हिन्दुस्तान का विभाजन हुआ। इतनी बड़ी त्रासदी थी, लेकिन साहित्य के नाम पर हमारे पास गिने–चुने उपन्यास हैं। छुट–पुट कहानियाँ हैं।''[18]

संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि डॉ. अजय शर्मा ने 'शंख में समंदर' उपन्यास के माध्यम से कोरोनाकाल के दौरान और बाद की वर्चुअल दुनिया से साक्षात्कार करवा कर जैसे गागर में सागर भर दिया है।

संदर्भ :–

1. हर्श देव, 'उत्तर आधुनिक मीडिया, तकनीक (2001),वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 20
2. अजय कुमार सिंह, 'इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता'(2014),लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद : 220
3. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 15
4. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 20
5. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 30
6. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 21
7. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 73
8. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 77
9. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 80

10. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 205
11. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 153
12. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 27
13. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 123
14. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 22
15. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 22
16. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 95
17. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 44
18. डॉ. अजय भार्मा, 'शंख में समंदर', (2023) बोधि प्रकाशन, जयपुर : 44